इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी साइंसेज (आईएलबीएस) के8वें दीक्षांत समारोह में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज इस दीक्षांत समारोह में मैं उन सभी उपाधि प्राप्त करने वाले डॉक्टर्स को बहुत शुभकामनाएं देता हूं, बधाई देता हूं जो आज **आईएलबीएस** से सम्मानित होने जा रहे हैं। यकृत एवं पित्त पर अपने शोध से इस संस्थान ने देश के अंदर और विश्व में प्रतिष्ठा बनाई है। आज इस संस्थान से आप अध्ययन, शोध और क्लीनिकल उपचार की प्रशिक्षण शिक्षा प्राप्त करने के बाद देश और राष्ट्र की सेवा के लिए निकले हैं। आज आपके माता-पिता और वे सभी डीन और शिक्षक, जिन्होंने आपको शिक्षा दी, अति प्रसन्न हैं।

लिवर प्रत्यारोपण हो या लिवर से संबंधित बीमारी हो, इसके लिए इस संस्थान की प्रतिष्ठा भारत के गांवों और शहरों में है। मुझे खुशी है कि इस संस्थान के डायरेक्टर एस.के. सरीन जी, जो केवल बीमारी होने के बाद इलाज नहीं करते, अपितु लिवर से संबंधित, हेपेटाइटिस से संबंधित बीमारियों की रोकथाम के लिए, इसकी जागरुकता को जन-जन तक पहुंचाने के लिए और किस तरीके से हम हेपेटाइटिस को रोक सकते हैं, लिवर से संबंधित बीमारियों को रोक सकते हैं, उस पर बड़े समर्पण के साथ काम करते हैं।

लिवर ट्रांसप्लांट के सर्जन के रूप में मोहम्मद रेला जी का नाम पूरे देश में प्रतिष्ठा के साथ लिया जाता है। गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट के रूप में डॉ. नागेश्वर रेड्डी जी का सान्निध्य भी हमें मिलता है।

हम सब जानते हैं कि जिस तरीके से हमारी जीवन शैली, खान-पान और रहन-सहन के कारण लिवर की बीमारियां लगातार गांवों तक तेजी से फैल रही हैं और लगातार संक्रमण के नए-नए वायरस आ रहे हैं, केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के अंदर वायरसों के कारण इलाज करने की जानकारी कई दिनों तक, कई महीनों तक नहीं मिलती है। बीमारियां कहीं न कहीं नए रूप में आ रही हैं। बीमारियों का जिस तरीके से स्वरूप बदलता है, उसी तरीके से हमारी तकनीकी का उपयोग हो और रिसर्च सही दिशा की ओर बढ़नी चाहिए।

मुझे खुशी है कि यह एक ऐसा संस्थान है, जहां शिक्षा के रूप में व्यावहारिक ज्ञान शिक्षा दी जाती है, ताकि इस ज्ञान से जीवन जीने की नई राह बन सके। इसी संस्थान में रिसर्च और नए इनोवेशन भी होते हैं। इसी विश्वविद्यालय और संस्थान के अंदर मरीजों का उपचार भी होता है। जहां शिक्षा, रिसर्च और उपचार हो, ऐसे

विश्वविद्यालय और संस्थान देश में बहुत कम हैं। हमारी चिंता यह है कि हमें बदलते स्वरूपों के अंदर, बदलती बीमारियों के संक्रमण के कारण रिसर्च और इनोवेशन पर उसी तरीके से तेजी से काम करना पड़ेगा।

मुझे खुशी है कि भारत का नौजवान अपनी बौद्धिक क्षमता से नए इनोवेशन और रिसर्च के अंदर भारत ही नहीं दुनिया के अंदर काम कर रहा है, तथा बेहतर रिसर्च और इनोवेशन के माध्यम से उन चुनौतियों का समाधान भी दे रहा है। हमारे सामने लिवर ट्रांसप्लांट बहुत गंभीर चुनौती है। इसमें जन जागरुकता का अभाव है। इस देश में दो लाख से ज्यादा लिवर ट्रांसप्लांट्स की आवश्यकता है लेकिन अभी यह संभव नहीं हो पा रहा है। हमने काफी कुछ बदलाव किए हैं।

इतनी बड़ी आबादी में जनजागरण करना, व्यक्तियों को समझना और समझाना, लोगों को अंगदान करने के प्रेरित करना और अंगदान के लिए बैंकिंग की तरह फैसिलिटी बनाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि हमारे संस्कार और संस्कृति सेवा की है। लेकिन, कहीं न कहीं हमारी पुरानी मान्यताएं भी इस अंगदान के बीच में अवरोधक हैं। हमें समाज को यह जानकारी देनी चाहिए कि आपके अंगदान से किसी की जिन्दगी को बदला जा सकता है और किसी को जिन्दगी दी जा सकती है। मुझे लगता है कि वह समय बहुत जल्द आएगा। अंग प्रत्यारोपण के बारे में हमारे रिसर्च और हमारी टेक्नोलॉजी में भी काफी परिवर्तन आया है। अंगदान के लिए देश में एक व्यापक अभियान चलाया जाए, ताकि हम सब लोग ऐसी गंभीर बीमारियों को अंग प्रत्यारोपण के माध्यम से किसी को जीवन जीने का सर्वश्रेष्ठ साधन दे सकें। इसके लिए व्यापक जागरूकता की जरूरत है।

आईएलबीएस संस्थान की इसमें विशेष रूप से भागीदारी है। मुझे खुशी है कि आईएलबीएस संस्थान में अभी तक 888 लिवर ट्रांसप्लांट हुए हैं। बड़ी संख्या में किडनी का भी ट्रांसप्लांट हुआ है। लेकिन, इसके साथ-साथ हमें सामाजिक रूप से भी इस तरह की बीमारी को रोकने के लिए एक व्यापक जनजागरण करना पड़ेगा। एक समय था जब सरकार केवल बीमारी होने के बाद रिसर्च और नए इनोवेशन करती थी। अब सरकार ने उस दिशा में परिवर्तन किया है। पहले जितना धन बीमारी के बाद अनुसंधान पर खर्च किया जाता है, उतना ही धन सरकार ने बीमारी होने के कारणों के बारे में अनुसंधान और रिसर्च पर खर्च करने का प्लान बनाया है, ताकि हम बीमारी की रोकथाम कर सकें।यह सरकार की एक सकारात्मक दिशा है।

हमारे माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी का तो 'हेल्थ फॉर ऑल' का विजन है। गरीब से गरीब व्यक्ति का भी बेहतर इलाज होना चाहिए। इसके लिए गाँव-ढाणी से लेकर देश के बड़े संस्थानों का नेटवर्क होना चाहिए। टेली

मेडिसिन, परामर्श रिसर्च और हर गाँव के अंदर तकनीकी का विकास हुआ है। हर गाँव को डिजिटल करने की कार्य योजना चलाई जा रही है, ताकि गाँव के अंदर बैठा व्यक्ति परामर्श प्राप्त कर बेहतरीन इलाज करा सके और बेहतरीन सुविधा प्राप्त कर सके। इस पर सरकार तेजी से काम कर रही है। एक समय था जब देश में केवल 7 एम्स थे। अब देश में 21-22 एम्स हैं। अब हर डिस्ट्रिक्ट के अंदर मेडिकल कॉलेज बनाने की प्रक्रिया चल रही है।

मुझे आशा है कि इस संस्थान ने जो नए आयाम स्थापित किए हैं, उससे देश में और ऐसे संस्थान बनेंगे तथा हमारे प्रतिष्ठित डॉक्टर इन संस्थानों के माध्यम से इसी तरीके से इन चुनौतियों का समाधान निकालेंगे। लिवर संबंधी बीमारी होने के कारणों की समझ यदि समाज के अंतिम व्यक्ति तक को हो जाए, तो हम लिवर संबंधी बीमारी को काफी हद तक रोक सकते हैं। अगर किसी को लिवर संबंधित बीमारी हो भी जाए, तो हम उसे भेदभाव की तरह ना लें। इसके लिए आपका अभियान सार्थक है।